pruk fodkl eY; f'k{kk vk/kkfjr
f} o"kh; fMIykek ikBØe

mís'; %&

- चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पांरगत शिक्षक जो समाधान–समृद्धि पूर्वक जीने के प्रेरणा से परिपूर्ण होगें एवं अपने छात्रों में भी ऐसा जीने की प्रेरणा एवं विश्वास दे पाएगे।
- सार्वभौम मानवीय आचरण के प्रति निष्ठा सम्पन्न शिक्षक जो अपने छात्रों में भी ऐस ही आचरण पूर्वक जीने की प्रेरणा एवं विश्वास दे पाएगे।
- प्रकृति में संतुलन सहित वसुधैव कुटुम्बकम हेतु वातावरण तैयार करना।
- मानवीय शिक्षा से समग्र विकास अर्थात् अखण्ड समाज – सार्वभौम व्यवस्था प्रत्यक्ष हो सके।

L=ksr %&

मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद)

प्रणेता एवं लेखक – श्री ए. नागराज जी

iLrqrdrk

मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान), कुम्हारी धमधा मुख्य मार्ग पर

जिला – दुर्ग (छ. ग.)

Hkfedk

विज्ञान शिक्षा से छात्र–छात्राओं एवं युवाओं में तर्कशक्ति का विकास हुआ है। जिससे आस्था (बिना जाने मान लेना) की प्रवृत्ति में कमी आयी है। अतः परम्परागत शैली जिसमें ''यह करो यह न करो'' अथवा ''ऐसा जीना चाहिए'' आदि उपदेश विद्यार्थियों में अब प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं। ऐसे में परिवारोन्मुखी, एवं समाजोन्मुखी शिक्षा के सार्वभौम स्वरूप पर चिंतन की नितान्त आवश्यकता महसूस हो रही है।

यूनेस्को (UNESCO) द्वारा अपेक्षित शिक्षा के चार स्तम्भों में मुख्य स्तम्भ Learning to live together अर्थात् ''साथ–साथ जीना सीखना'' पर जोर दिया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार ने मानव मूल्य शिक्षा हेतु निम्न मार्गदर्शन दिया है :–

1. पाठ्यक्रम किसी भी प्रकार के अंधविश्वास, कर्मकाण्ड व पूजन पद्धति से मुक्त हो।
2. पाठ्यक्रम रहस्यवाद, सम्प्रदायवाद व व्यक्तिवाद से मुक्त हो।
3. पाठ्यक्रम ''करो, न करो'' आदि उपदेश न होकर तर्कपूर्ण, ढंग से इसका प्रयोग एवं विश्लेषण द्वारा परीक्षण कर सकते हो।
4. पाठ्यक्रम को आचरण में प्रमाणित किया जा सकता हो।
5. पाठ्यक्रम दर्शन आधारित हो।

आधुनिक शिक्षा को रोजगारोन्मुखी ही नहीं बल्कि परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी भी होने की आवश्यकता है, ताकि हर परिवार समृद्धिपूर्वक जी सके। समाधान का अर्थ मानव संबंधों में परस्पर तृप्ति एवं प्रकृति के साथ संतुलन पूर्वक जीना है। समृद्धि अर्थात् अभाव–मुक्त जीना। '' समृद्धि '' का अर्थ आवश्यकता से अधिक अपलब्ध होने का भाव है। '' समाधान '' के आधार पर ही मानव आवश्यकताओं को पहचान पाता है। प्रकृति में हर इकाई के होने का एक निश्चित अर्थ है जो सार्वकालिक एवं सार्वभौम है। यह निश्चित अर्थ ही '' मूल्य '' है जो कि सार्वभौम ही होते हैं। उपरोक्त आशय की पूर्ति के लिए सार्वभौम मानवीय मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जाती रही है।

मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) उपरोक्त सभी कसौटियों को पूरा करता है, जिसका परिचय ''जीवन विद्या शिविरों'' के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। मध्यस्थ दर्शन से निस्सृत चेतना विकास मूल्य शिक्षा मानव में पाँच सद्‌गुणों को सुनिश्चित करती है :–

1. स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भयमुक्ति
2. श्रेष्ठता के सम्मान के प्रति विश्वास
3. स्वयं की प्रतिभा (समझ) के प्रति विश्वास
4. स्वयं के व्यक्तित्व (जीने) के प्रति विश्वास
5. स्वयं की प्रतिभा के अनुरूप व्यक्तित्व में संतुलन के प्रति विश्वास अर्थात समझ के अनुरूप जीने के प्रति विश्वास

6. व्यवहार में सामाजिकता के प्रति विश्वास अर्थात भयमुक्त समाज की स्थापना एवं निरंतरता के लिए अपनी भागीदारी के प्रति विश्वास

7. उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन के प्रति विश्वास

आज धरती एक गाँव (Global Village) हो गयी है। अतः विश्व शांति हेतु वैश्विक नागरिक (Global Citizen) अर्थात् सार्वभौम मानवीय आचरण को पहचानने की आवश्यकता बन गई है। सार्वभौम मानवीय आचरण अर्थात ऐसा आचरण जो हमेंशा स्वयं को स्वीकार्य होता है एवं सभी के लिए शुभ ही होता है। यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत होने से उपलब्ध होता है। सार्वभौम मानवीय आचरण पूर्वक जीने से मानव भूतकाल की पीड़ा, वर्तमान से विरोध एवं भविष्य की चिन्ता से मुक्त होता है। ऐसा मानव योजना बद्ध तरीके से निश्चित कार्यक्रम के साथ स्वयं के प्रति विश्वास पूर्वक जीता हुआ परिवार में समृद्धि एवं समाज में व्यवस्था (भयमुक्त समाज) को प्रमाणित करता है।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रकाश में सार्वभौम मानवीय आचरण, सार्वभौम मानवीय शिक्षा, सार्वभौम मानवीय व्यवस्था, सार्वभौम मानवीय संविधान का व्यावहारिक स्वरूप व्याख्यायित होता है। साथ ही मानव (स्त्री–पुरुष) में समानता एवं अमीरी गरीबी में संतुलन पूर्वक जीने की राह प्रशस्त होती है।

अतः ऐसी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जिससे परिवार से लेकर विश्व तक कहीं भी मानव विश्वासपूर्वक जी सके। ऐसी ही शिक्षा को मानवीय शिक्षा अथवा चेतना विकास मूल्य शिक्षा कहा गया है। यह मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) से निःसृत है। मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद की परिचयात्मक प्रस्तुति **thou fo|k f'kfoj** है। न्यूनतम एक सात दिवसीय शिविर के बाद ही मानव, चेतना के उस धरातल से परिचित हो पाता है जिस पर खड़े होकर ये बातें हो रही हैं। मध्यस्थ दर्शन में प्रयुक्त अधिकांश शब्दों के अर्थ परम्परा से भिन्न हैं।

vr% ,slk cgqr lHko gS fd thou fo|k f'kfoj fd;s fcuk ;fn dksbZ bl iLrko dks i<rk gS vFkok lquk gS mls cgqr lkjh ckrsa v0;ogkfjd yx ldrh gSA blfy, vuqjks/k gS fd ,slh fLFkfr esa ;g lkpsa fd ,Lkk gksus dh vko';drk gS ;k ugha\ ;fn vko';drk gS rks 0;ogkfjd dSls gksxk\ bl gsrq U;wure ,d lkr fnolh; f'kfoj vko';d gSA vkids Lusg]lg;ksx ,oa ekxZn'kZu dh vis{kk esa&

/kU;okn----

vuqdzef.kdk

Ø- l-	v/;k;	i"B l[;k
1.	चेतना विकास मूल्य शिक्षा की आवश्यकता	1–2
2.	चेतना विकास मूल्य शिक्षा की मूल अवधारणाएँ	3–4
3.	चेतना विकास मूल्य शिक्षा – नीति का प्रस्ताव	5–10
4.	चेतना विकास मूल्य शिक्षा का फलन	11
5.	अध्ययन की विषयवस्तु	12
6.	अध्ययन विधि और प्रक्रिया	13
7.	प्रथम वर्ष के अध्ययन के विषय वस्तु	14–19
8.	स्वावलंबन के प्रति विश्वास के लिए उत्पादन गतिविधियां	19–20
9.	वर्तमान डी.एड. प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम (समीक्षात्मक व्याख्या हेतु)	20–22
10.	द्वितीय वर्ष अध्ययन के विषयवस्तु	23–26
11.	प्रथम व द्वितीय सत्र में स्वमूल्यांकन का स्वरूप	27–29